एम.ए. हिंदी
हिन्दी साहित्य का इतिहास
(आदिकाल से रीतिकाल)

Paper- MAH 110

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में साहित्येतिहास की समझ को विकसित करना है। यह सिद्ध है कि किसी रचना का निर्माण इतिहास के विशेष काल खंड और ऐतिहासिक परिस्थितियों का प्रतिफलन होता है। इतिहास की इन्हीं परिस्थितियों के साथ रचना की प्रवृत्तियों का तादात्म स्थापित करना इस पेपर का केन्द्रीय हिस्सा है। साथ ही हिन्दी साहित्य के विकास की गति और दिशा को रेखांकित करना है। हिन्दी साहित्य के इतिहास को आम तौर पर चार भागों में बाँटा गया है। इस पेपर के तहत आदिकाल से रीतिकाल तक साहित्य को इतिहास के विकास के साथ अध्ययन अपेक्षित है। इस काल के साहित्य के कालों के नामकरण, विभाजन, सीमांकन और युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर छात्रों में साहित्य विवेक के साथ ही इतिहास विवेक की महत्ता को आधार प्रदान करना है।

प्रमुख ग्रंथ:-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य: उद्भाव और विकास - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिंदी साहित्य की भूमिका - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास- डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

एम.ए. हिंदी
आधुनिक पूर्व हिंदी कविता

Paper- MAH120

यह पेपर पाठ आधारित है। इस पेपर में आठ कवियों की कविताओं को शामिल किया गया है। ये कवि हिंदी साहित्य के इतिहास के आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल से संबंधित हैं। इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में कविता की समझ और आस्वादन को विकसित करना है। इन कवियों की पाठ व्याख्या के क्रम में छात्र मध्य-कालीन काव्यबोध, युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में कवियों की संवेदना उनकी सृजनभूमि एवं वर्तमान अर्थवत्ता और भाषिक वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।

पाठग्रंथ -

1. विद्यापति के गीत - सं. नागार्जुन
2. कबीरदास - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. पद्मावत - मलिक मोहम्मद जायसी
4. भ्रमरगीत सार - सं. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
5. रामचरितमानस, कवितावली - तुलसीदास
6. मीरा पदावली - सं. परशुराम चतुर्वेदी
7. बिहारी रत्नाकर - सं. जगन्नाथदास, रत्नाकर
8. घनानंद कवित्त - सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

एम.ए. हिंदी
हिंदी कथा साहित्य कहानी

Paper- MAH 130

हिंदी गद्य के विकास के साथ हिंदी में कई साहित्यिक विधाओं का जन्म हुआ इनमें से एक कहानी है। इस पेपर का उद्देश्य हिंदी कहानी की विकास यात्रा को रेखांकित कर छात्रों में इस विधा के उद्भव एवं विकास की समझको पुष्ट करना है। अपने उद्भव एवं विकास-यात्रा में हिंदी कहानी युगीन परिस्थितियों एवं समसामयिक युग बोध से समावेशित होती रही है, जिनके कारण हर युग की कहानियों में प्रवृत्तिगत भिन्नता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस पेपर के तहत हिंदी कहानी के विकास के इतिहास में प्रवृत्ति गत बदलावों के एतिहासिक परिप्रेक्ष्य को रेखांकित कर छात्रों कों हिंदी कहानी की विकास-यात्रा की समझको ठोस आधार प्रदान करना है। हिंदी कहानी की इस विकास-यात्रा में कई साहित्यिक आंदोलन हुए जो हिंदी कहानी को सर्जनात्मक उर्जा प्रदान करते हैं। इनआंदोलनों की विशेषतओं को उजागर कर इन की साहित्यिक अर्थवत्त का विश्लेषण करना इस पेपर का ध्येय है। यह पेपर पाठ आधारित है। अनुमोदित कहानियों की व्याख्या एवं विश्लेषण के क्रम में छात्रों युगीन परिस्थितियों, प्रवत्तियों एवंतत्कालिन युगबोध से परिचित हो सकेंगे।

संदर्भग्रंथ:-

1. हिंदी कहानी का इतिहास - गोपालराय
2. हिंदी कहानी का विकास - मधुरेश
3. हिंदी कहानी की रचना-प्रक्रिया –परमानंद श्रीवास्तव
4. कहानी नईकहानी - नामवरसिंह

एम.ए. हिंदी
नाटकएवंरंगमंच

Paper- MAH 140

यह पेपर पाठ आधारित है। इस में हिंदी के आठ नाटककारों के नाटकों को शामिल किया गया है। इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में हिंदी नाट्य-बोध और भारतीय रंग-शैलियों की दिशा तथा प्रवृत्तियों की समझको विकसित करना है। हिंदी नाट्य विधा के विकास में कई भारतीय एवं पाश्चात्य रंग अवधारणाओं और हिंदी रंगचिंतकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस बदलते नाट्य परिवेश से अवगत कराना इस पेपर का अहमहिस्सा है। अनुमोदित नाटकों के पाठ के क्रम में छात्र नाट्य-बोध, युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में नाटककारों की संवेदनाओं, उनकी सृजन भूमि एवं वर्तमान अर्थवत्ता औ ररंग भाषा के वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।

पाठ्यग्रंथ-

1.	नाट्यशास्त्र और भारतीय परंपरा	:	हजारी प्रसाद द्विवेदी
2.	हिन्दी नाटक – उद्भव और विकास	:	दशरथ ओझा
3.	आधुनिक नाटक और रंगमंच	:	(सं) नेमिचंद्र जैन
4.	हिंदी नाटक	:	बच्चनसिंह
5.	नाटककार भारतेंदु की रंग परिकल्पना	:	सत्येन्द्रतनेजा
9.	नाटकालोचन के सिद्धान्त	:	सिद्धनाथकुमार

एम.ए. हिंदी
हिन्दी साहित्य का इतिहास
(आधुनिक काल)

Paper- MAH210

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में साहित्येतिहास की समझ को विकसित करना है। यह सिद्ध है कि किसी रचना का निर्माण इतिहास के विशेष कालखंड और ऐतिहासिक परिस्थितियों का प्रतिफलन होता है। इतिहास की इन्हीं परिस्थितियों के साथ रचना की प्रवृत्तियों का तादात्म स्थापित करना इस पेपर का केन्द्रीय हिस्सा है। साथ ही, हिंदी साहित्य के विकास की गति और दिशा को रेखांकित करना है। यह पेपर हिंदी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल से संबंधित है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल कई मायनों में विशेष है। इसकाल में सामाजिक सुधार आंदोलन, साहित्यक आंदोलन और वाद, भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का स्वर सुनाई देता है। इन आंदोलनों और वादों के बरअक्स युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर छात्रों में साहित्य विवेक के साथ ही इतिहास विवेक की महत्ता को आधार प्रदान करना है।

प्रमुख ग्रंथ:-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह

एम.ए. हिंदी
आधुनिक हिंदी कविता

Paper- MAH220

यह पेपर पाठ आधारित है। इस पेपर में हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के आठ कवियों की कविताओं को शामिल किया गया है। इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में आधुनकि काव्य बोध की दिशा और प्रवृत्तियों की समझ को विकसित करना है। आधुनिक काल में कई काव्य आंदोलन और वाद हुए हैं। इन आंदोलनों और वादों की प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचय कराना इस पेपर का अहम हिस्सा है। अनुमोदित कवियों की पाठ व्याख्या के क्रम में छात्र आधुनिक काव्यबोध, युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में कवियों की संवेदना, उनकी सृजनभूमि एवं वर्तमान अर्थवत्ता और भाषिक वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।

पाठग्रंथ:-

1. समकालीन हिंदी कविता - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
2. नई कविता और अस्तित्ववाद - रामविलास शर्मा
3. निराला की साहित्य साधना - रामविलास शर्मा
4. महाप्राण निराला - गंगाप्रसाद विमल
5. कामायनी एक पुनर्विचार - मुक्तिबोध

एम.ए. हिंदी

हिंदीकथासाहित्यउपन्यास

Paper- MAH230

इस पेपर का उद्देश्य विद्यार्थियों में उपन्यास विधाकी समझको विकसित करना है। यह सिद्ध है कि किसी भी विधाके निर्माण का उद्देश्य साहित्य की समझ और उद्देश्य को विद्यार्थियों, पाठकों तक पहुँचाना होता है। उपन्यास विधा का भी यही उद्देश्य है। इस पेपर के द्वारा छात्र उपन्यास के उद्भव और विकास के इतिहास को समझ सकेंगे । समाज में समय-समय पर होने वाले परिवर्तनों को औपन्यासिक रचनाओं के माध्यम से छात्रों को समझाने का प्रयत्न किया जाएगा। इस प्रश्न पत्र के माध्यम से छात्रों प्रेमचंद के उपन्यासों से लेकर युगीन प्रतिनिधि उपन्यासों की विशेषताओं को समझ सकेंगे। उपन्यास विधाके माध्यम से प्राचीन से लेकर समकालीन समय में हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना एवं छात्रों में आलोचनात्मक दृष्टि उत्पन्न करनाही इसप्रश्न-पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

प्रमुख ग्रंथ:-

1. हिंदी उपन्यास का इतिहास - गोपाल राय
2. हिंदी उपन्यास एक अंर्तयात्रा - रामदरस मिश्र
3. समकालीन हिंदी उपन्यास - सूरज पाली पाल
4. उपन्यास और लोक जीवन - राल्फफॉक्स

एम. ए. हिंदी

हिंदी साहित्य – अन्य गद्य विधाएँ

(निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, व्यंग्य रचना, एकांकी,रिपोर्ताज, यात्रा वृत्तांत)

Paper- MAH240

यह पेपर पाठ आधारित है। इस पेपर में हिंदी निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, व्यंग्य रचना, एकांकी, रिपोर्ताज और यात्रा वृतांत के साहित्यिक रूपों को शामिल किया गया है। इस पेपर का लक्ष्य आधुनिक युग के गद्य साहित्य में कथेत्तर साहित्य की पहचान से छात्रों को अवगत कराना है। हिंदी के गद्यात्मक साहित्य के विभिन्न रूपों के प्रति बोध और उनकी प्रवृत्तिगत समझ को विकसित करना है। आधुनिक युग के नवजागरण काल में निबंध के अतिरिक्त हिंदी गद्य के विकास क्रम में विभिन्न विधाओं की उल्लेखनीय भूमिका रही है, अनुमोदित रचनाओं के पाठ से छात्र कथेत्तर साहित्य की संवेदना, उसकी पृष्ठभूमि, वर्तमान अर्थवत्ता और उसके भाषागत वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।

प्रमुख ग्रंथ :-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - रामचंद्र शुक्ल
2. प्रतिनिधि हिंदी निबन्धकार - विभुराम मिश्र
3. साहित्य सहचर - हजारीप्रसाद द्विवेदी
4. हिंदी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी
5. हिंदी निबंध के आधार स्तम्भ - हरिमोहन
6. भारतेंदु युग - रामविलास शर्मा
7. हिंदी एकांकीशिल्प विधि का विकास-सिद्धनाथ कुमार
8. हिंदी रेखाचित्र - मक्खन लाल शर्मा
9. गद्य की पहचान - अरुण प्रकाश

सामान्य भाषा विज्ञान एवंहिंदी भाषा

Paper- MAH 310

इस पेपर का उद्देश्य भाषा का वैज्ञानिक ढंग से पठन-पाठन करना, जिसके अंतर्गत भाषा के विभिन्न रूप, वर्गीकरण, संसार के भाषा परिवार तथा अन्यशाखाओं के साथ संबंध, ध्वनि विज्ञान, अर्थ विज्ञान, रूप विज्ञान आदि का समुच्चय अध्ययन किया जाता है। इसी पेपर के अंतर्गत हिंदी भाषा का उद्भव एवं विकास, हिंदी के शब्द भंडारों की स्थिति एवं गति, हिंदी भाषा की समस्याएं एवं चुनौतियां के साथ-साथ लिपि के विकास जिस में देवनागरी लिपि के महत्व पर प्रकाशडाल कर छात्रों में भाषा के उद्भाव और विकास के संबंध वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवगत कराना है।

प्रमुख ग्रंथ:

1. सामान्य भाषा विज्ञान-भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेंद्रनाथ शर्मा
3. हिंदी भाषा इतिहास एवं स्वरूप- राजमणि शर्मा
4. हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम –रविंदनाथ श्रीवास्तव

एम. ए. हिंदी

भारतीय एवं पाश्चात्य कव्य शास्त्र

Paper- MAH 3 20

यह पेपर दो खंडों में विभाजित है। जिसमें पहला भारतीय काव्यशास्त्र एवं दूसरा पाश्चात्य कव्यशास्त्रहै। भारतीय काव्यशास्त्र के अंतर्गत छात्र कोकाव्यशास्त्रकी गहन जानकारीप्रदान कर उसे साहित्य-बोध का आधार देना प्रमुख उद्देश्य है। संस्कृत काव्यशास्त्र पर आधारित भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का विवेक विभिन्न आचार्यों की अवधारणाओं के साथ न केवल साहित्य की अर्थवान और प्रासंगिक समझ देने में कारगर होगा वरनसृजनात्मक साहित्य को व्याख्यायित एवं विश्लेषित कर उसमें निहित जीवन दर्शन एवंसाहित्यिकप्रतिमानों का सटीक विश्लेषण की चेतना भी विकसित करेगा।इस पेपर के दूसरे खंड पाश्चात्य कव्यशास्त्र का उद्देश्य छात्र को पश्चिम के प्रमुख साहित्य-चिंतकों एवं उनकी साहित्यिक वैचारिक स्थापनाओं से परिचित कराना है। इन साहित्य-चिंतकों की मान्यताएं, साहित्य-सर्जन की प्रक्रियाएं या उसकी विशेषताएं साहित्य की समझदारी विकसित करने में कितनी अर्थवान है, इस प्रश्न के आलोक में पश्चिम के प्रमुख साहित्यिकवादों एवं प्रतिमानों को रेखांकित करना इस खंड का केंद्रीय हिस्सा है।

प्रमुख ग्रंथ :-

1. भारतीय काव्य-शास्त्र : सत्यदेव चौधरी
2. भारतीय काव्य-शास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. पाश्चात्य काव्य-शास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा
4. साहित्य-सिद्धांत : राम अवध द्विवेदी
5. हिंदी आलोचना के बीज शब्द : बच्चन सिंह

एम.ए. हिंदी

अस्मितामूलक चिंतन - दलित एवं आदिवासी साहित्य

Paper- MAH 330

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों को दलित एवं आदिवासी साहित्य चिंतन की वैचारि की से अवगत कराना है। अन्य भाषाओं में अस्मितामूलक चिंतन के बरक्स हिंदी साहित्य में भी अस्मितामूलक चिंतन ने महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। इस चिंतन के संदर्भ दलित एवं आदिवासी समाज की अस्मिता उन के सामाजिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य हैं। इन संदर्भों की व्याख्या एवं विश्लेषण के सहारे दलित एवं आदिवासी साहित्य की वैचारिकी एवं सरोकार को चिहिनत कर छात्रों में अस्मितामूलक चिंतन के अर्थ एवं अर्थवत्ता की समझ विकसित करना इस पेपर का हिस्सा है। इस पेपर के दो भागहैं, दलित एवं आदिवासी साहित्य की वैचारि की एवं दलित एवं आदिवासी साहित्य से संबंधित पाठ। दलित एवं आदिवासी चिंतन की वैचारिकी में साम्य के साथ वैषम्य भी है। दोनों चिंतन में वैचारिकी के स्तर पर साम्य एवं वैषम्य को रेखांकित करना भी इस पंपर का एक उद्देश्य है। इस पेपर में दलित एवं आदिवासी साहित्य से संबंधित पाठ के तहत लग भग सभी प्रचलित साहित्यिक विधाओं को स्थान दिया गया है। इन पाठों की व्याख्या एवं विश्लेषण के क्रम में छात्र दलित एवं आदिवासी साहित्य की बारीकियों से परिचित हो सकेंगे।

प्रमुख ग्रंथ:-

दलित साहित्य

1. दलित साहित्यका सौंदर्य शास्त्र – शरण कुमार लिम्बापे
2. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र – ओम प्रकाश वाल्मिकि
3. दलित साहित्य का समाज शास्त्र – हरिनारायण ठाकुर
4. आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श - देवेंद्रचौबे
5. अभिशप्तचिंतन से इतिहास चिंतन की ओर - डॉ. धर्मवीर
6. जाति व्यवस्था – सच्चिदानंद सिन्हा

आदिवासी साहित्य

1. जनजातीय संस्कृति - गयापाण्डेय
2. जनजातीय भारत - नदीयहसनैन
3. आदिवासी साहित्य-यात्रा - रमणिकागुप्ता (सं.)
4. आदिवासी कौन - रमणिकागुप्ता (सं.)
5. हाशिये की वैचारिकी - उमाशंकरचौधरी (सं.)
6. आदिवासी दर्शन और समाज - हरिराममीणा
7. मानव शास्त्र - डॉ. रामनाथशर्मा

एम.ए. हिंदी

अस्मितामूलक चिंतन – स्त्री साहित्य

Paper- MAH 340

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों को 'सबाल्टर्न डिस्कोर्स' के संबंध में जानकारी देना है। इस पेपर के माध्यम से समाज में स्त्री के स्थान, उसके शोषण वदमन चक्रोंके संबंधमें छात्रों को जानकारी देने का प्रयास किया जाएगा। पितृसत्ता के स्वरूपों, नियमों व उन के बनाए गये कायदों के कारण स्त्री जीवन किस प्रकार वंचित उपेक्षित जीवन जीने को विवश रहा है; इस की भी विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की जाएगी। पराधीन स्त्री विभिन्न वर्गों और समुदायों में बाँटी गयी है। जैसे-हिंदू स्त्री, मुस्लिम स्त्री, दलित एवं अल्पसंख्यक स्त्री, घरेलू स्त्री, कामकाजी स्त्री आदि। इन सभी पराधीन स्त्रियों के शोषण के विभिन्न आयामों की जानकारी भी इस पेपर के माध्यम से दी जाएगी। समाज में स्त्रियोंके प्रति समानता का बोध उत्पन्न करना इस पेपर का मुख्य उद्देश्य होगा।

सदंर्भ ग्रंथ:-

1. दसे केंड सेक्स - सिमोनदबोउवार
2. श्रृंखला की कड़िया – महादेवी वर्मा

3. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास - सुमनराजे
4. स्त्री संघर्ष का इतिहास – राधा कुमार

एम.ए. हिंदी
हिंदी साहित्य: आलोचना

Paper- MAH410

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में आलोचना के अर्थ को स्पष्ट करते हुए उनके आलोचनात्मक विवेक को धार प्रदान करना है। आलोचना आधुनिक हिंदी साहित्य की एक विधा है। किसी रचना के अर्थ के विस्तार, उसके सृजन के कारणों, उसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की पड़ताल आलोचना का केन्द्रीय कार्य होता है। आधुनिक हिंदी साहित्य में कई नई साहित्यिक विधाओं का जन्म होता है। इन विधाओं को एक दिशा देने में आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि को रेखांकित करना इस पेपर का हिस्सा है। आलोचना के आरंभ के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, साहित्य के मूल्यांकन, उसकी व्याख्या, हिंदी आलोचना के प्रकार, नए-नए वाद और प्रतिमान एवं साहित्यिक अस्मितामूलक विमर्शों को दिशा देने में आलोचना की भूमिका आदिइस पेपर का केन्द्रीय हिस्सा है। इस पेपर के सहारे छात्रों में 'वाद-विवाद-संवाद' की प्रवृत्ति को मजबूत आधार प्रदान कर उनमें 'सहमति का विवेक और असहमति का साहस' का बीजारोपण करना है।

अनुमोदित ग्रंथ:-

1. हिंदी आलोचना का विकास: डॉ. नंदकिशोर नवल
2. हिंदी आलोचना - डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
3. हिंदी आलोचना के बीजशब्द - डॉ. बच्चन सिंह

एम.ए. हिंदी
प्रयोजनमूलक हिंदी

Paper- MAH420

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों को साहित्येतर हिंदी से परिचित कराना है। साहित्यिक हिंदी से इतर प्रयोजनमूलक हिंदी अथवा कामकाज की हिंदी के विविध स्वरूपों की जानकारी इस पेपर के माध्यम से प्रदान की जाएगी। काम काज एवं कार्यालयी हिंदी की भाषा के परिचय के साथ हिंदी कम्प्यूटिंग, मीडिया लेखन, अनुवाद विज्ञान के सिद्धांतों एवं प्रयोगों से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाएगा। पारिभाषिक शब्दावलियों की निर्माण विधियों के संबंध में भी इस प्रश्नपत्र के माध्यम से जानकारी प्रदान करायी जाएगी। साहित्यिक हिंदी के अतिरिक्त रोजगार परक हिंदी के विविध रूपों की जानकारी देना इस पेपर का मुख्य उद्देश्य होगा।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. प्रयोजन मूलक हिंदी-कृष्ण कुमार गोस्वामी
2. प्रयोजन मूलक हिंदी संरचना एवं अनुप्रयोग-राम प्रकाश एवं दिनेशगुप्त
3. प्रशासन में राजभाषा हिंदी-कैलाशचंद्र भाटिया
4. प्रयोजन मूलक हिंदी की समस्याएँ-प्रो. दिलीप सिंह

एम.ए. हिंदी

भारतीय साहित्य - इतिहास एवं संस्कृति

Paper- MAH430

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में भारतीय साहित्य के वृद ज्ञान एवं उस के महत्व से परिचित कराना है। भारतीय साहित्य के अध्ययन से छात्र में भाषा, भौगोलिक क्षेत्र, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों तथा राजनीतिक एकता के साथ – साथ देश के जनजीवन को निकटतासे परिचित हो सकेंगे। भारतीय साहित्य के अध्ययन से समन्वित सांस्कृतिक क्षेत्र का निर्माण होता है। भारतीय साहित्य की एकता भाषा की एकता नहीं बल्कि विचारों और भावनाओं की एकता है । भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर भारतीय साहित्य के मनोभावों के प्रति बौद्धिक एवं तार्किक दृष्टि पैदा कराना अपेक्षित है। छात्रों को भारतीय साहित्यकार की श्रेष्ठरचनाओं के आधार पर भारतीय इतिहास एवंसं स्कृतिका समुचित परिचय प्राप्त कराना मात्र ही उद्देश्य नहीं है बल्कि भारतीय भाषा और साहित्य के परस्पर तुलनात्मक अध्ययन का मार्ग भी प्रशस्त कराना है।

प्रमुख ग्रंथ:

1. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास - डॉ. नगेंद्र
2. भारतीय साहित्य – भोला शंकरव्यास
3. भारतीय साहित्य की समस्या – राम विलास शर्मा
4. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर

एम. ए. हिंदी
प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : जनसंचार माध्यम

Paper- MAH440

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की समझ को विकसित करना है। यह सिद्ध है कि आज हम ऐसे मीडिया-युग में सांस ले रहे हैं, जिसमें समाज को बदलने का सामर्थ्य है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों की इसी शक्ति की पहचान के लिए इसके तकनीकी और व्यवहारिक पक्ष का बोध कराना इस पेपर का केंद्रीय हिस्सा है। साथ ही जनसंचार माध्यमों के विकास की गति, दिशा, सामाजिक प्रभावों और उसमें पत्रकारिता के स्वरूप को रेखांकित करना भी शामिल है। इन माध्यमों में लेखन, भाषायी विशिष्टता की पहचान करते हुए इनसे जुड़े विभिन्न कानूनों और आचार संहिता की जानकारी देकर छात्रों को प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया-विवेक से संपन्न बनाना है।

प्रमुखग्रंथ:-

1.	हिंदी पत्रकारिता	:	कृष्ण बिहारी मिश्र
2.	हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास	:	रमेश कुमार जैन
3.	जनसंचार एवं पत्रकारिता	:	रमेश कुमार जैन
4.	हिंदी पत्रकारिता	:	वेदप्रताप वैदिक
5.	जनसंचार - सिद्धांत और अनुप्रयोग	:	विष्णु राजगढ़िया
6.	जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा	:	जगदीश्वर चतुर्वेदी
7.	जनसंपर्क प्रबंधन	:	कुमुद शर्मा
8.	संचार से जनसंचार	:	रूपचंद गौतम
9.	पत्रकारिता एवं संपादन कला	:	एन. सी. पंत
10.	Understanding Media	:	Marshal McLuhan
11.	Communications	:	Raymond Williams

बी.ए हिंदी (वैकल्पिक)

यह पेपर बी.ए. में अध्ययन कर रहे अन्य अनुशासनों के छा़ोंके लिए एक अनिवार्य पेपरहै ।इस पेपर के तीन भाग हैं -

1. हिंदीसाहित्यकाइतिहास: संक्षिप्तपरिचय

2. हिंदी पद्य साहित्य

3. हिंदी गद्य साहित्य

हिंदी साहित्य का इतिहास खंड के तहतछात्रोंकोहिंदीसाहित्यकीविकासयात्राकासंक्षिप्तपरिचयदेनाहै।इसकेतहतछात्रहिंदीसाहित्यकेइतिहासकेकालोंकेनामकरण , सीमांकनऔरउनकीप्रमुखप्रवृत्तियोंसेअवगतहोसकेंगे।इसपेपरकादूसराएवंतीसराभागपाठआधारितहै।पद्यसाहित्यकेतहतनिर्धारितपाठसेसंबंधितकवियोंकेपरिचयकेसाथ-साथउनकीकविताओंकीव्याख्याएवंविश्लेषणऔरसौंदर्थकोउभारनाइसकाहिस्साहै।इसकेव्याख्याएवंविश्लेषणकेक्रममेंछात्रोंकानिर्धारितकवियोंकीसंवेदना, उनकायुगीनपरिस्थितियोंसेसंबंध, उनकीवर्तमानअर्थवत्ताएवंइनकेभाषिकवैशिष्ट्यसेपरिचितकरानाइसकाउद्देश्यहै।इसपेपरकातीसराभागहिंदीकागद्यसाहित्यहै।यहपेपरभीपाठआधारितहैजिसकेहिंदीसाहित्यकीगद्यविधाओ-कहानी, निबंधआदिविधाओंकोशामिलकियागयाहै।इनअनुमोदितपाठोंकेसहारेछात्रोंमेंहिंदीगद्यविधाओंकेविस्तार-विकासकीसमझदारीविकसितकरनाइसपेपरकाउद्देश्यहै।हिंदीसाहित्यकीअलग-अलगविधाओंकीव्याख्याविश्लेषणकेमेंछात्र समसामयिकयुगबोधएवंमनुष्यकेमनोविज्ञानसेपरिचितहोसकेंगे।

संदर्भग्रंथ:-

1. हिंदीसाहित्यकासरलइतिहास - विश्वनाथत्रिपाठी